International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 194-196

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 194-196
www.allresearchjournal.com
Received: 26-09-2015
Accepted: 29-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीयमहाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीयमहाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता–एक विश्लेषण

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य में अनेक सुन्दर रचनाएं साहित्य की गरिमा को बढाती है। अनेक कारणों से अनेक आपत्तियां आलोचक उठाते हैं, जो उस रचना के महत्व को घ्यान में रखते हुए उनका निराकरण कर सत्य की कसौटी पर परखने का प्रयास करते हैं। ऐंसा होना भी चाहिए क्योंकि आक्षेपों से घिरी रचना चाहे कितनी ही सुन्दर क्यों न हो उसे अग्नि परीक्षा से गुजरने के बाद ही सम्मान और आदर प्राप्त होता हैं। यह भी सत्य है कि कई बार आलोचना आलोचना के लिए भी होती है उससे बचना चाहिए।1

पृथ्वी राज रासो आदिकालीन श्रेंष्ठ रचना है, परन्तु अनेक प्रश्नों से घिरी होने के कारण अनेक बार इसकी प्रामाणिकता अथवा अप्रामाणिकता के विषय में प्रश्न उठाए जाते रहे हैं तथा आज तक निर्विवाद रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि यह रचना प्रामाणिक है अथवा अप्रामाणिक।चन्द बरदाई के द्वारा लिखे इस महाकाव्य के तीन–चार रूप मिलते हैं। प्रथम स्वरूप बृहद् ग्रंथ का प्राप्त होता है जो लगभग ढाई हजार पृष्ठों का है तथा उसके 69 अध्याय अथवा सर्ग हैं इसमें 16306 छन्द हैं। इसका प्रकाशन नागरी प्रचारणी सभा द्वारा किया गया है। मध्यम रूपान्तर में 7000 छन्द हैं जिसका अभी तक प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाया है। इसकी मूल प्रति आज भी बीकानेर के पुस्तकालय में सुरक्षित है। लघुतम रूपान्तर में केवल 1300 छन्द हैं। डॉ माताप्रसाद गुप्त इसी प्रति को मूल ग्रन्थ माना है।2

प्रारम्भ में पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के विषय में आक्षेप नहीं किया जाता था। कर्नल रॉड ने इसकी साहित्यिक सुन्दरता पर मोहित हो कर लगभग तीन हजार पद्यों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया था। फ्रेंच विद्वान् गार्सां द तासी ने इस ग्रंथ को प्रामाणिक घोषित कर दिया था ,फलस्वरूप रॉयल एशियाटिक सोसायटी ने इसका प्रकाशन आरम्भ कर दिया था,परन्तु सन ्1875 में डॉ बूलर को काश्मीर से जयानक भट्ट की रचना पृथ्वी राज विजय प्राप्त हुई जो संस्कृत में रचित है। इसग्रंथ की अधिकांश घटनाएं रासो की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक हैं ,अतः बूलर को रासो की प्रामाणिकता पर सन्देह हुआ तथा उन्होंने इस का प्रकाशन बीच में ही छोड दिया। बूलर के सन्देह व्यक्त करते ही अनेक विद्वान आलोचक उनके पक्ष में खडे हो गए।

इस ग्रंथ को अप्रामाणिक मानने वालों में विशेषकर गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा का नाम उल्लेखनीय है । उन्होंने अनेक तर्क दे कर इसे अप्रामाणिक घोषित कर दिया तो उधर डॉ दशरथ शर्मा ने भी ओझा द्वारा उठाई शंकाओं को निर्मूल सिद्ध करते हुए रासो को प्रामाणिक सिद्ध कर दिया है। ऐसी स्थिति में रासो की प्रामाणिकता आज भी सन्देहास्पद बनी हुई है।3 कुछ विद्वान इसे अर्द्धप्रामाणिक भी मानते हैं। इस सन्दर्भ में विद्वानों के चार वर्ग बन गए हैं जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

1. प्रथम वर्ग– इस वर्ग के विद्वान रासो को अप्रामाणिक रचना मानते हैं। इस वर्ग में श्यामल दास, मुरारी दान, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, डॉबूलर, मारिसन, श्री अमृतलाल शील, मुंशी देवी प्रसाद, आचार्य रामचन्द्र शुक्लऔर डॉ राम कुमार वर्मा मुख्य हैं। इन का कहना है कि चन्द का अस्तित्व ही सन्देहास्पद है और वह पृथ्वी राज का समकालीन ही नहीं था।
2. द्वितीय वर्ग– यह वर्ग उन विद्वानों का है जो रासो ग्रंथ को प्रामाणिक मानते हैं तथा चन्दबरदाई को पृथ्वीराज का समकालीन मानते हैं। इस वर्ग में डॉ श्याम सुंदर दास, मथुरा प्रसाद दीक्षित, मोहन लाल विष्णलाल पाण्डया, मिश्रबन्धु, मोतीलाल मनेरिया, प्रमुख हैं।
3. तृतीय वर्ग– इस वर्ग के विद्वान रासो को अर्द्धप्रामाणिक रचना मानते हैं। इनमें डॉ सुनीति कुमार चटर्जी, मुनिजन विजय, अग्रचन्द नाटा, कविराज मोहन सिंह तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी के नाम हैं। इन विद्वानों का मत है कि पृथ्वी राज के दरबार में चन्द नाम का एक कवि था, जिसने रासो की रचना की थी परन्तु यह ग्रंथ अपने मूल रूप में प्राप्त नहीं है। आज जो प्राप्त है वह मूल रासो का परिवर्तित और विकृत रूप है। अतः रासो एक अर्द्धप्रामाणिक रचना है।

4. चतुर्थ वर्ग– इस वर्ग में अधिक विद्वान नहीं हैं। नरोत्तम स्वामी का मानना है कि चन्द कवि पृथ्वी राज का समकालीन था परन्तु उसने प्रबन्ध रूप में रासो की रचना नहीं की। वे जैनग्रंथमालामें रचित फुटकर पदों को फुटकर रचना मानते हैं।

रासो को अप्रामाणिक ठहराने वाले तर्क के आधार पर निम्न लिखित कारण व्यक्त करते है। ये कारण मुख्यतः तीन प्रकार के हैं–

क– घटना और इतिहास में असामांजस्य

ख–काल अथवा समय में असामाजस्य

ग–भाषा सम्बन्धी कारण

अब सविस्तार इन बिन्दुओं पर चर्चा कर के निर्णय तक पहुंचने का प्रयास किया जाएगा।

क– घटना एवं इतिहास में असामांजस्य–

अप्रामाणिक रचना मानने वाले निम्न लिखित तर्क अपने मत को पुष्ट करने के लिए देते हैं।

1 पृथ्वीराजरासो में वर्णित अनेक घटनाएं, नाम इतिहास से नहीं मिलतीं। इस ग्रंथ में परमार, चालुक्य आदि क्षत्रियों को अग्निवंशी कहा गया है जबकि वे सूर्यवंशी प्रमाणित हैं तथा इतिहास में इसका उल्लेख है।

2 रासो में पृथ्वीराज की माता का नाम कमला प्रकाशित है जबकि इतिहास में उनका नाम कर्पूर रानी विख्यात है।

3 इतिहास के अनुसार अनंगपाल दिल्ली का शासक नहीं था और न ही उसने पृथ्वी राज को गोद लिया था जबकि रासो में इन को सत्य कहा गया है।

4 रासो में पृथ्वीराज के चौदह विवाहों का उल्लेख है जबकि इतिहास में इस के कोई प्रमाण नहीं मिलते।

5 रासो में गुजरात के राजा भीम सिंह का वध पृथ्वी राज के द्वारा दर्शाया गया है जबकि इतिहास में इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता।

6 रासो में वर्णित सोमेश्वर वध भी इतिहास में प्रमाणित नहीं होता।

7 पृथ्वी राज के हाथों गौरी की हत्या का भी इतिहास में वर्णन नहीं है।

8 रासो में पृथ्वी राज की बहन प्रथा का विवाह मेवाड के राजा समरसिंह के साथ होना बताया है, जबकि तथ्य यह है कि शिलालेखों के अनुसार समर सिंह पृथ्वीराज के बाद 109 वर्षों तक जीवित रहा, अतः इसे सम्भव नहीं माना जा सकता।

9 रासो में वर्णित तिथियां प्रायः अशुद्ध प्रतीत होतीं हैं ,क्योंकि इतिहास से इनका मेल नहीं खाता तथा इनमें अन्तर लगभग 90–100 वर्षों का है ।

10 पृथ्वी राज का गोद लिया जाना तथा संयोगिता स्वयंबर की घटना भी इतिहास सम्मत नहीं है।

11 रासो में अरबी फारसी शब्दों की अधिकता है जबकि पृथ्वी राज के काल में इन शब्दों का प्रचलन अधिक नहीं था।

ख– समय में असमानता

काल वैषम्य रासो की प्रांमाणिकता में बडी बाधा है। कर्नल टॉड का मानना है कि रासो में दिए गए सम्वत् एवं इतिहास में तालमेल नहीं बैठता अतः इस रचना को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।इससे सम्बन्धित अनेक तर्क और भी हैं–

1 पृथ्वी राज की मृत्यु सम्वत् 1158 में दर्शाई गई है जबकि इतिहास में सम्वत् 1148 में मृत्यु का उल्लेख है, इसी तरह जन्म सम्वत में 1115 में रासो में लिखित है जबकि इतिहास में 1220 लिखित है।

2 आबू पर भीम चालुक्य का आक्रमण, शाहबुद्दीन के साथ पूराजेर युद्धकी तिथियां भी सही नहीं हैं।

3 सम्वत् 1430 के आस पास रचित हमीर रासो में इन उपरोक्त घटनाओं का जरा भी उल्लेख अथवा संकेत नहीं मिलता।

5. रासो में शहाबुद्दीन गौरी का वध पृथ्वीराज द्वारा सम्वत् 1214 में वर्णित है जबकि इतिहास के अनुसार गौरी का वध सम्वत् 1263 में शक्खर जाति द्वारा हुआ।

इस तरह इन तथ्यों के आधार पर रासो को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता । यदि कवि चन्द पृथ्वी राज का समकालीन होता तो इतनी विसंगतियां न होतीं। रामचन्द्र शुक्ल भी इन तथ्यों के आधार पर इसे जाली ग्रंथ कहते हैं।4

ग–भाषा सम्बन्धी कारण

रासो में अरबी फारसी शब्द भी उसकी प्रामाणिकता के विषय में सन्देह पैदा करते हैं क्योंकि चन्द बरदाई के समय में इन शब्दों का प्रयोग नहीं होता था। इस भाषा के अनुसार रासो की रचना 16वीं शताब्दी सिद्ध होती हैं प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी धीरेन्द्र वर्मा ने भी रासो की भाषा को 16वीं शताब्दी का स्वीकार किया हैं।

पृथ्वीराज रासो को प्रामाणिक मानने वाले विद्वानों के मत–

इस ग्रंथ को प्रामाणिक मानने वाले विद्वानों का मत है कि पृथ्वी राज रासो ग्रंथ जाली नहीं है अपितु प्रामाणिक रचना है। इसमें कुछ प्रक्षिप्त अंश जुड गए हैं जो स्वाभाविक है। एक लघु संस्करण जो 15वीं शताब्दी का माना जाता है उसे मुनि जिन विजय मूल प्रति मानते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि इन पद्यों के प्रकाशन के बाद अब इस विषय में किसी को सन्देह नहीं रह गया है कि चन्दवरदाई नामक कवि पृथ्वी राज के दरबार में नहीं थे।5

डॉ दशरथ शर्मा ने भी सभी मतों का खण्डन करते हुए कहा है कि पृथ्वी राज रासो प्रामाणिक रचना हैं। उन्होंने इसकी प्रामाणिकता में निम्न लिखित तथ्य प्रस्तुत किए हैं–

1 रासो की मूल प्रति में घटना वैषम्य अथवा काल वैषम्य नहीं है और न ही भाषा संबन्धी अव्यवस्था है।

2 मूल लघुतम प्रति के अनुसार राजपूत कुल की अग्निकुंड से उत्पत्ति नहीं हुई, बल्कि ब्रह्माके यज्ञ से वीर चौहान माणिक राय के उत्पन्न होने का उल्लेख मिलता है।

3 अनंग पाल और पृथ्वी राज के संबन्ध की चर्चा तो मूल लघुतम प्रति में भी है।

4 संयोगिता के स्वयंवर का सविस्तार उल्लेख सभी प्रतियों में है।

6. कैमास वध का वर्णन लघुतम प्रति में हैं जो पृथ्वी राज का प्रधान था।

डॉ दशरथ शर्मा अंत में लिखते हैं कि अपने मूल रूप में रासो की प्रतिहासिकता अक्षुण्ण है।6

इसी तरह डा मोहन लाल विष्णु लाल पाण्डयॉ तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भी इसकी प्रामाणिकता के विषय में अनेक तर्क देते हैं–

1 उपरोक्त विद्वानों का मत है कि अगर पृथ्वी राज रासो की तिथियों को आनन्द सम्वत् के अनुरूप माना जाए तो सभी तिथियां इतिहास सम्मत ठहरतीं हैं।

2 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने यह सिद्ध किया है कि 12वीं शताब्दी की भाषा में जो अनुस्वारान्त की प्रवृत्ति मिलती है वही प्रवत्ति पृथ्वी राज रासो में भी मिलती है। अतः इस कृति का इस शताब्दी का होना असंदिग्ध है।7

3 इस ग्रंथ की रचना शुकशुकी संवाद के रूप में हुई थी अतः जिन सर्गों में यह शैली नहीं मिलती उन्हें प्रक्षिप्त मानना चाहिए। इस तरह इतिहास विरुद्ध अंश स्वतः ही निकल जाएंगें।

4 चन्दबरदाई लाहौर का मूल निवासी था, लाहौर के आसपास मुस्लिम आक्रमण कारियों का प्रभाव पडना स्वाभाविक ही है

तथा चन्दकवि द्वारा अरबी फारसी शब्दों का प्रयोग अस्वाभाविक नहीं है।

5 यह एक साहित्यिक रचना है कोई इतिहास ग्रन्थ नहीं। अतः साहित्यिक रचना व इतिहास में मूल भेद ही कल्पना का समावेश होता है। अतः इस रचना को इतिहास का चश्मा लगा कर नहीं देखा जाना चाहिए।8

अतः रासो को अप्रामाणिक नहीं कहा जा सकता ।रासो का लघुतम संस्करण उसके मूल के पर्याप्त समीप है तथा चन्द कवि था इतिहासकार नहीं । सम्भव है कवि ने अपनी दृष्टि से उसमे थोडा परिवर्तन किया हो तथा इतिहास के साथ कल्पना का भी मिश्रण किया हो। अतः इसे उपरोक्त संदर्भ में सही दृष्टि कोण से देखना चाहिए। डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस संदर्भ में ठीक ही लिखा है कि–निरर्थक मंथन से जो दुस्तर फेन राशि तैयार हुई है उसे पार करके ग्रंथ के साहित्यिक रस तक पहुंचाना हिन्दी के विद्याार्थियों के लिए असंभव सा व्यापार हो गया है। अतः इस रचना के महत्व को देखते हुए जब तक अकाट्य प्रमाण प्राप्त न हों इसे प्रामाणिक मानना ही श्रेयस्कर होगा।

सन्दर्भ सूचि

1. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 19
2. डॉ राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ 55
3. आचार्य चतुर सेन शास्त्री इतिहास ग्रन्थ पृ 49
4. डॉ हरीशचन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 25
5. डॉ हरीश चन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का आदि काल पृ 38
6. डॉ भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ 29
7. डॉ बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ 53
8. डॉ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास 56